मीडिया समाज का दर्पण है उससे अलग नहीं हो सकता–अक्षय कुमार

आबूरोड, 21 सितम्बर। विश्व शांति की ज्योति जलाओं की आहवान के साथ आज शांतिवन परिसर मुं ब्रहमाकुमारीज की मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन का उद्घाटन प्रभागाध्यक्ष ब्र.कु ओमप्रकाश, उपाध्यक्ष ब्र.कु. करूणा एवं विभिन्न क्षेत्रो के प्रतिष्ठित अतिथियों ने ज्योति प्रज्जवलित कर के किया।

देश के विभिन्न प्रांतो एवं नेपाल से आए लगभग डेढ़ हजार मीडियाकर्मियों के समक्ष मीडिया की सामाजिक प्रतिबद्वता के लिए आध्यात्मिक मूल्य एवं जन संचार माध्यम की भूमिका, दायित्व एवं समस्याओं पर चर्चा करते हुए प्रधानमंत्री के पूर्व मीडिया सलाहकार अक्षय कुमार ने कहां कि अनादिकाल से अच्छाई और बुराई के दायरे में न केवल मीडिया बल्कि अन्य व्यवसायों के लोग भी बंटे रहे है। आज भी मीडिया में नारद व संजय की कार्यप्रणाली को अपनाने वाले लोग दो खेमों में बंटे हुए है। आसुरी व देवीय शक्तियां एक साथ चल रही है। भौतिकता तेजी से आगे आ रही है और इसमें विरोधाभाष भी कायम है। 21वीं सदी में मीडियाकर्मियों से पाठकों व दर्शकों की अपेक्षाएं बढ़ती जा रही है लेकिन इस सच्चाई को स्वीकार करना होगा की मीडिया जिस समाज का दर्पण है उससे अलग भी नही हो सकता। भौतिकता के झरनों से जब अन्य क्षेत्र निर्लेप नही तो मीडिया भी अपवाद नही हो सकता।

दूरदर्शन हैदराबाद के निर्देशक डॉ पी.जे. सुभाकर ने कहां कि मीडिया के सशक्तीकरण से न केवल समाज बल्कि राष्ट्र भी सशक्त होगा। मीडिया कर्मियों को बेहतर समाज की संरचना के लिए नेक नियति से प्रयास करना चाहिए। मीडिया का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह न केवल मानवाधिकारों के हनन को रोकने के लिए निष्पक्षता से आगे आए बल्कि हर क्षेत्र में शांति स्थापित करने का भी प्रयत्न करें।

मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. ओमप्रकाश ने स्वागत भाषण में मीडियाकर्मियों से सकारात्मक रूख अपनानें और ईश्वरीय संदेश को जन जन तक पहुंचाने का आग्रह किया। उपाध्यक्ष ब्र.कु. करूणा भाई ने कहा कि व्यवसायिक प्रतिस्पर्द्धा व दबाव के बावजूद तनावरहित कार्यप्रणाली अपनाने पर बल दिया। सत्र की शुरूआत चंद्रपुर की नीकिता व वैष्णवी द्वारा स्वागत नृत्य से हुई। अतिथियों को पुष्प गुच्छे बडौदा से आई बहनों ने भेंट किए।

संस्था के महासचिव बी.के निर्वैर भाई ने कहां कि मीडियाकर्मी आत्मचिंतन करे कि वे समाज को क्या परोस रहे है। यह सोच त्यागनी होगी के समाचार नकारात्मकता पर आधारित हो तो उसकी पाठक संख्या बढ जाएगी। उन्होंने इस बात पर संतोष जताया कि दिशा परिवर्तन के दौर में सकारात्मक कॉलम भी अधिकांश समाचार पत्रों में शुरू कर दिए है। तन, मन, धन से विश्व को स्वर्ग बनाने और इसमें शांति लाने के लिए संस्था के संस्थापक ब्रहमा बाबा का संदेश भी उन्होंने दोहराया। भारतीय जन संचार संस्थान दिल्ली के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. प्रदीप माथुर ने अपने वक्तव्य में कहां कि यदि हम आध्यात्मिक मूल्य पर टीके रहना सीख ले तो अनावश्यक टकराव की स्थिति टल सकती है। मीडियां को सामाजिक सुव्यवस्था के लिए जागृति पैदा करने का कर्म निभाना चाहिए। उनका मानना था कि मात्र मीडिया पर दोषारोपण करने से स्थिति में बदलाव नही आएगा यथार्थ को समझना होगा। आलोचना की बजाय समस्या के समाधान पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए नीति अपनानी चाहिए। टीवी सीरियलों व समाचारों में बात को तोड मरोडकर प्रस्तुत करने की प्रवृति पर अंकुश लगाने पर सहमति जताते हुए उन्होंने कहा कि स्थिति में बिगडाव के लिए पाठक व दर्शक अपनी जिम्मेदारी से बच नही सकते। देश का दुर्भाग्य है कि अच्छे पत्रकारों को आपेक्षित सम्मान नही मिलता। उनके समाचार पत्र पीट रहे है। समस्या मीडिया के व्यवसायीकरण की अधिक है क्योंकि लगभग 100 अरबपति सभी प्रमुख टीवी चैनलों को खरीदनें की फिराक में है ताकि वे अपने निहित स्वार्थो की पूर्ति कर सके। राजयोगिनी ब्र.कु. नलिनी ने पत्रकारों से अनुरोध किया कि ईश्वरीय परिवार के श्रीमत को प्रचारित करे। शुभचिंतन व शुभ भावना को आधार बनाकर अपने कार्य क्षेत्र में आगे बढ़े। दैनिक समाज कटक के सम्पादक शरत मिश्रा, ईटीवी के राजनैतिक सम्पादक एन.के. सिंह, आंधप्रदेश के पूर्व सूचना एवं जनसम्पर्क निर्देशक डॉ. सी.वी नरसिम्हा रेड्डी ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। ब्र0 कु0 शारदा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

फोटो फाइल- मीडिया-कांफ्रेंस-इनेगुरल जेपीजी शांतिवन आबूरोड में राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन का द्वीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन करते हुए प्रभाग के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष व गणमान्य अतिथि।